ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–५२
दिनांक– शुक्रवार, ०७ जुलाई, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 32.6 एवं 25.1 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 91 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 74 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.1 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 4.1 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 3.9 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 30.3 एवं दोपहर में 35.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में वर्षा नही हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(08–12 जुलाई, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 08–12 जुलाई, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों के आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। अगले 2–3 दिनों के दौरान कहीं–कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। उसके बाद वर्षा की सक्रियता में वृद्धि हो सकती है, जिसके प्रभाव से तराई तथा मैदानी भागों के जिलों में मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 30–34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 24–27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 12 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है।

• समसामयिक सुझाव

- जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का व्यवहार सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का व्यवहार करें।
- जो किसान भाई धान का बिचड़ा अब तक नहीं गिराये हों, नर्सरी गिराने का कार्य 10 जुलाई तक सम्पन्न अवश्य कर लें। धान की अगात किस्में जैसे–प्रभात, धनलक्ष्मी, रिछारिया, साकेत–4,राजेन्द्र भगवती एवं राजेन्द्र नीलम उत्तर बिहार के लिए अनुशसित है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई हेतु 800–1000 बर्ग मीटर क्षेत्रफल में बीज गिरावें। नर्सरी में क्यारी की चौड़ाई 1.25–1.5 मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार रखें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से मिलाकर बीजोपचार करें। 10 से 12 दिनो के बीचड़े वाली नर्सरी से खर–पतवार निकालें।
- अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए सीधी बुवाई करें। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकॉवा विधी से सीधी बुवाई करें। यदि खेत सूखा है तो सीडड्रील मशीन से या छिटकॉवा विधी से बुवाई कर सकतें हैं। सूखे खेत में सीधी बुवाई करने पर बुवाई के 48 घंटें के अन्दर खरपतवारनाशी दवा पेन्डिमेथीलीन 1.0 लीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। यदि बुवाई के बाद बारिश शुरू हो जाती है तो पेन्डिमेथीलीन दवा का छिड़काव न कर वैसी हालत में बुवाई के 10–15 दिनो के बीच में नामिनी गोल्ड (बिसपेरिबेक सोडियम 10: एस0 सी0) दवा का 100 मि0 ली0 प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करना नही भूले। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाष के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
- खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। खेत की जुताई में प्रति हेक्टेयर 10 से 15 टन गोबर की सड़ी खाद, 30 किलो नेत्रजन, 60 किलो स्फुर एवं 50 किलो पोटाश का व्यवहार करें। इसके लिए प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारित कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
- उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। उपरी जमीन में बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फुर, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। बहार, पूसा 9, नरेद्र अरहर 1, मालवीय–13, राजेन्द्र अरहर–1 आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बीज दर 18–20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।
- प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
- उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें।
- पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
- किसान भाई गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।

आज का अधिकतम तापमानः 32.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.2 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 25.7 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.0 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)